

DPN5571

Title :

१. मालिनी दण्डक स्तोत्र
२. शिवशक्ति समर साव माहामाया स्तोत्र
३. त्रितत्व शोधन मत पूजा विधि

Run. No. 6262

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि व हस्त / Ritual and Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / नेपाल भाषा मि ५२१ वाक्य
newa direction

Size in cms. ८.५ x १९.५

Folios 34

Lines (in a page)

8

Compl. / Incompl.

प्रमाण व प्रमाण के मगः / Beginning and end folia missing
Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhu. / Ran. /

Illus. : Mandala diagram. partly extant
मण्डल चित्र छापा: जव (कुने ५२१) /

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

20

15

10

5

0 cmts. 5 10 15 20 25 30

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ शुद्धादकनन्दवाकुलाय नमः ॥ सर्वकलविनाशाय महानाग ॥ तु
 भादकं ॥ पायोद्यनाशनार्थत्वा मधूनास्त्राय याम्यहं ॥ ॥ साखल
 नस्तानाननकूनसंस्तानं ॥ शर्कनागुट्ठादकं ॥ कामायलाग्न्यापु
 धलित्वा नशिकयामितं ॥ ॥ अलिस्ताना ॥ सना ॥ किं ॥ विवा मर्म
 ॥ समिलेन मूर्ध्नि ॥ मृद्वि सिद्धिपदयुग्मं अलिस्तानं ददाम्यहं
 हनजिलस्ताना ॥ ॥ ॥ श्रीखड्गचन्दन ॥ ॥ ॥ दमलय संस्तुतं चन्दनं हि
 शीतलं ॥ वीनजां कुरु विद्वत्तद्गुहा वाममसिद्धयः ॥ ॥ यदुस्मा ॥ क
 सूर्यगुणकपूर्णं सिद्धकंदनकादिकं ॥ ॥ अग्रेनाहा कर्णं गृह्ण

वीनवन्दिता ॥ ॥ सिन्दुरा ॥ यूनवर्धनकं गस्य लाङ्गुर्नवीनरूपं
 गृहाण वीनवीनं सिन्दुरं वर्णदायकं ॥ ॥ दृष्टिमा ॥ स्वर्णनका
 वयोतालं चतुर्दशसूत्रमिकं ॥ दिव्यवक्त्रं रुलाप्यार्थं दृष्टिदोषं
 मितं ॥ ॥ ऊजमका ॥ उपवीतमिदं स्तुतं मन्त्रकं गस्य लाङ्गुर्नवीनं गृहा
 ण वीनयागस्य रुलसंपादय नमः ॥ ॥ कर्णपताका ॥ कर्णार्थयुग
 नं चैव पताका कर्णं ॥ ॥ अतिनी ॥ दिव्यरूपं रुलाप्यार्थं गृहाण पत्रमेव
 नी ॥ ॥ पंचपताका ॥ पञ्चवर्णयताकात् पञ्चरेतात्मरूपराकाय

ॐ वग्नरुला प्रार्थ गृहाण यत्र मध्वनी ॥ ॥ अदुःखल ॥ कर्था
 सादिमिदं स्तुते विविगते कुरु भक्तिनी दक्षीण वसुदेव गि गृहाण
 मय मूर्ध्नी ॥ ॥ श्रीमधि ॥ कुरु कुरु कुरु कुरु चिनाम मिम मूर्ध्नी
 ननाम न्याधि दक्षिण सुकुरु लोकयाम्यहं ॥ ॥ अदुःखल दक्षिण यत्र
 नेउमाला ॥ अदुःखल सर्ववीर्य वीर राव वल यदं सर्वमय नक्षत्र
 ल्यं गृहाण यत्र मध्वनी ॥ ॥ अदुःखल ॥ नाना यष्ट मृग नक्षत्रि मा
 ल्या कुरु मादया सो राग्य सिद्धि र्दं दं मया ना हने मूर्ध्नी ॥ ॥

कुरु वि काय द्याय ॥ को (७) य विग वसु ॥ को गुरु पीत (७) नि र्ग
 देवा वसु युग्म ॥ गृहाण पुवरा ध्वनी ॥ ॥ याता सन राय ॥
 सर्व सिद्धि करं याकं सर्व भक्ति करं गुरु ॥ सर्व दाव हनी भा ॥ पीत द
 स गृहाण म ॥ ॥ गाय हल ॥ लाजा युक्त यन यूर्ध्व ना अया पिरु ल
 यदं गृहाण दहि मध्वनी गुरु कानि वयू यरा ॥ ॥ नक्षत्र वावाय ॥
 रक्षणी अंग थपयं नरुवा अयि चिल्ल पुवनी मध्वनी च व ल वनी
 कर्तृ गि कर्क शोक यामि च नैय द्यं भक्ति मय दहिय रूली ॥ ॥ यन ऊ

ऊमाननयूजा एनजायक ॥ द्वायानासिचक चर्तितिक खानं चक ॥ श्री
 सूर्यार्घ्याचक वाक्का ॥ अष्टादि ॥ वाक्का ॥ यथा एत ॥ गुज ऊमानं सयथ
 ॥ भक्तिकामनार्थ ॥ तदुक्तवानी नात्रा एव मेव यथ ॥ एत लपोपिका
 मनार्थ ॥ श्रीमत्कीर्ती स्वदेवगायूजानिमित्तार्थ ॥ कर्तुं श्रीसूर्यार्घ्य
 नमः ॥ यथ नमः ॥ धूपनमः ॥ साग ॥ मोहान्नकाने मग्नी ऊनानी ॥
 ननसिरेष्टादृगमूदने स्थिते नोमि विवरास्कनी ॥ यजा ॥ ताहाय
 जा एनधियकीत ॥ एतद्व्यादवता रुलता म्मासा गवाना ॥ सिद्धिस्तु

क्रियालेश वृद्धिस्तु धनायुषः ॥ यष्टिस्तु धनी न वृ ॥ भक्तिस्तु गृह
 मम ॥ सर्वविघ्नसमर्पणं सर्वभक्तिकर्तृ ॥ आयुः पूज्यकोम
 ल ॥ ॥ सगतिवर्धनी ॥ यथावाद्यहानानी कर्तव्येव कुवानदी ॥ म
 देवि विघातानी ॥ भक्तिर्वरुवानदी ॥ वाक्का ॥ कमलुनयूषा राज
 ननमस्तुनामि ॥ आचार्यमूरुय दूदमासर्प यथ नमः ॥ आचार्या
 यकमलुनयूषा राजन समर्थयामि ॥ ॥ थन आचार्यन ताहाया
 पूजा एनकायता नासियो ॥ अथकार ॥ वाक्का ॥ श्रीसूर्यार्घ्य

नमस्का न्नासयानां अर्घ्यार्घ्ययगयूजा ॥ आत्मयूजा ॥
धनस्यार्घ्यदत्ता माहनीरुय ॥ ॥ धनमालिनीदानं ॥ यक्षव
लिवियो ॥ चनवलवास ॥ समयकाय तीर्थकाय तर्पणकाय ॥
दवधिर्षींशीसम्भवा आवाहनं निर्या ॥ धनमालकादगुलिया
यविरावरागमदवताकल ॥ अयूजायाय निवर्तित्वधनक
मालधामकल ॥ कम्पुसगुदधनियूजायाय ॥ ॥ धनतिलक
चन्दनादिक्काय ॥ अकवनाउ ॥ धनयूजा ॥ धूप ॥ वनस्पतिरेखा

त्यन्त्रं नानागल्बेश्ययूजिर्ता आद्याय सर्वद्वानां धूपार्घ्ययतिग
द्युता ॥ ॥ दीया ॥ सुप्रकाशमहादीय सर्वगतिमिलोयर्ह ॥ सरा
अयनकर्तृति दीयार्घ्ययतिगद्युता ॥ ॥ समयनेद्ययकाय ॥
अन्नमहानसीदिव्य नसेष्यहिंसमन्त्रिर्ता मयानिवदिर्तागुत्यग
हाद्यनमभ्यति ॥ ॥ तीर्थकाय ॥ मधूमरुमहामाय वादूहीसक
सागरा ॥ गृहाद्यकययादवी ॥ लाकस्यैकात्रिणी ॥ ॥ रुलगा
बलमखशुद्धिकाय ॥ रुलरुलादिनामूल मिद्रुकलादिसंयुनी

अमुदादिमपकान्जाम्बीनादियगृध्नी ॥ नर्यदी ॥ ॥ गायहा
 लं ॥ यावहाशक्तनस्यपुएवति एवगायावदाकाङ्गगम्पयावस्म
 र्गगम्पयागगदगम्पति र्गपतिर्गगर्गद ॥ १४ ॥ यावद्वस्मपिना
 कीरुनिकमलननूर्ध्वदसिद्धान्तवानीगावम्पयुगयोगासगदपनिवृ
 त्तवद्वगनाश्लक्ष्मी ॥ ॐ युगिष्ठयुगिष्ठावनदाएवकु ॥ ॥ धनम
 लकाजययाय ॥ ॥ मगुलदयकागमालकासागयाय ॥ ॥ य
 पूषधूपदीयाश्चविस्मिगत्सर्वविधियनिष्टे ॥ ॥ मम्कु ॥ ॥ दाहिसम्क

य ॥ ॐ नुधिकमिदं कर्म यदिच्छिदमच्छिदकं ॥ कनूस्सृष्टुर्गर्गर्ग ॥ ॥
 दक्षिणचगृहागम् ॥ ॥ धनचामूष्मयूजामालधसोनी ॥ ॥ र्ग
 वलिभूर्धयागयूजाभासयूजा ॥ ॥ यचवलिवियोगिदेवनवास्मा
 याज्रासनग्रायाश्लितधनेकोमहाकालयूजा ॥ ॥ महथितामना
 यपायूजा ॥ ॥ श्रयाश्लित ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ महाकालरुनवायपायूजा ॥
 वलिभूर्धयागयूजाभासयूजा ॥ ॥ यचवलिवियोगिदेवनवास्मा
 याज्रासनग्रायाश्लितधनेकोमहाकालयूजा ॥ ॥ महथितामना
 यपायूजा ॥ ॥ श्रयाश्लित ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ महाकालरुनवायपायूजा ॥

नयपुपिचाच हगवगालथतनाकसुसह्यदियम्वनमहाकाय
 हिनाञ्जुसमयलमूहुमालाभनाशोदकोशखद्वाभननेकनक
 ननमहागोदसुनामसिवसायियगृक्रवलिसवनिभूलिरुलु
 वसायुगानगभयूषादिसहतामियारुका नियाजितोपिनिवात्र
 सहितानाथे नमस्तवनदाममस्ताहाहूँ हूँ ॥ खड्गमूडा ॥ अ
 धाममूहुयूजा ॥ नुंजचोकनखड्गयोसशासना ॥ आधनादि
 नुंजवासनाययायूजा ॥ ध्यान ॥ नुंजामूहुचवुनूयाचधात्रद

कनालिनी ॥ नकवर्धनीधवीजवाकसुसत्रिणी ॥ जठिमीयूषा
 सीकाभसूर्यकाटिसमधरणी ॥ पिंगलु ॥ पिंगकेशिनकाहीचमि
 लोचनी ॥ स ॥ काकैकालनूयीचउर्ध्वकेशीचयूजा ॥ सधिसवर्ग
 रुषांगी ॥ हाजलनवसुषिता ॥ मूहुमालाधनीशोडीयाद्यासक
 टिरुषिणी ॥ खड्गहटकेहसुं वउमनूखद्वागमवचा ॥ कहीकोया
 लधानिचयुतदहस्तितवनी ॥ नवधाममहादवीचविकीचन
 भासुता ॥ ध्यानयूषानमः ॥ आवाहनपाशादिवन्दनादिक्काया ॥

श्यामललिङ्गं श्रीं श्रीं सिद्धिचामुमुयेयायुः॥३॥ वलिं लिङ्गं श्रीं
श्रीं सिद्धिचामु मुमुयेयं दमयायुषधूपदीपनेयद्यचा
मुमुयेवलिंगुद्रैर्भानिकुनरसर्वविद्यानां गयसर्वनागय
भानिकुनरं दवल्लिप्रतिभामुद्रैर्दुःखदुःखस्वाहा॥ ॥ काद्यमुद्रा॥
वसन्धदिनपूजा॥ जयादिनपूजा॥ ॥ वलिमुद्रा॥ धूपदीपनेय
काय॥ ॥ जययाय॥ महाकालयात्रेणं १०॥ वाममुद्रा॥ लिङ्गं
महोलदयक॥ कृष्णवाना॥ निखानन्दयेनभक्तं निष्कनकनिष्ठनाम

यीशामातीतयनं हुन्यं शैववर्कनमाम्बहं॥ वाममुद्रा॥ वाममुद्रा
धूपयायुकेटिगदनाघानदंष्ट्राकनाला नीडीनिर्मासिदहा
शिखिणिखाकालकलीलिङ्गादिद्यानामिधुमाला रुदिगलमनि
लिङ्गमूरिदूषिताम्बीखद्वाङ्गपद्यसुहृत्सायसुगुममनियूनचञ्चिनाथि
तसंस्का॥ वाममुद्रादयञ्चनविष्मोतसर्वविधिपनिपूषुमेमु॥ ॥
न्यासलिकाया॥ वलिस्थाय॥ सूर्यसाक्षिधाय॥ वलिचामुमुयेयायुः॥
२॥ श्यामदगसाचूपिपूजा॥ लिङ्गकालिशवेदोदनीलो हृदयुयनमम्ब २॥

॥ सा गा ख भ य व ल ना भ य ण क्रि कार्या य न त्प न ॥ य षु (ध्रुव) द्य ल
 या गी ध्रु र व ज्ञ ना थ न मु त ॥ य षु र्क ल य या या ॥ अ द्या दि ॥ वा क्य उ थ ॥
 य षु या ज्ञा क्त स स म नु क ने ॥ कुं य षु पा ण य वि द्य ह वि ष्य क म्म यि धी
 म ही ॥ त न्ना जी व य वा द या ॥ पार्थ ना ॥ पूर्व ज न्म कृ त ॥ त्या पा य षु ज न्म
 नि जा य त ॥ सर्व पा य वि नि र्म क्त्वा स्व र्ग लो क ॥ स ग कृ त ॥ म ह्ना य ॥
 य ॥ मू षु गि न क्का य ॥ म त त य स म य ती र्थ न क ॥ वृ क न क्का य ॥ स
 मा ह नी वि स र्ज न या न ड ॥ क्का य ॥ उ कान क या ढ ॥ उ खान क या ॥ ॥

थ न अ लि ष क का य थ न तं स क ल या तं ॥ उ का ना धृ य पा दा या दि
 च न्द न ति या ॥ च न्द न ल पि तं पृ ष्ठं य वि र्ग पा य ना ण न ॥ अ य दा ह न
 त नि र्ग ल श्री स नु ति व र्द्ध न ॥ ॥ सि न्दु न ॥ सि न्दु न श्रि य स म्पा दि षी
 धा र्या णि ने ष र ण लि तं ॥ स ग म ड य मा प्रो ति सि न्दु न व र्ज दा य की ॥
 मा ह नी ॥ ॥ उ द्वा षी ॥ उ द्वा षी स न ॥ उ च लि ता ल श्री प दा ली ल या व ड क
 ॥ सु म र व ला धृ त व ती ते ज ष्य रा मा लि नी ॥ कृ द्या यी त वि षु र्द्ध च न्द न
 क ने ष यी ता स दा ष ॥ न दा ता न्द वी स ग र्त न मा मि णि न सा र्त्त सा न ग मा ह

नी॥ ॥ सगुणया॥ सिद्धार्थदधियावकः सगुणसंपूर्णचक्षुष्यमः
 रथीयः संप्रति का न हो च गुरुदसवार्थसिद्धिप्रदीदीर्घायुधिनका
 नरविक्रयनेयस्य सदावाङ्मूर्ते सार्ययोगकुलध्वनये रोगवान्
 ॥ सुः सदायागुवधः ॥ ॥ समयवियोगः अखलकलषानन्दकलेप
 नसुखनिनिःसुखन्दसुनक्षमनी निःसुखकलसंकिता ॥ अ
 मुताका ना सिद्धिज्ञानकलवनः अमुगस्तनिधयस्मिन् ॥ अ
 मन्त्रपिणी ॥ अन्त्रधनरुहसंकोर्षः अन्त्रधनरुहसन्निधी ॥ अन्त्रधनरुह
 ॥ स्वानवियोगः यदेवाजकः ॥

दर्वः अन्त्रधनरुहसंकोर्षः ससा नमाहनीदवीसुधिसंकोर्षका
 धीः आयुर्वृद्धियरः राग्यः तज्जावृद्धिकर्तृगुणः ॥ देवदोः सरील
 द्वात्रिंशोऽहकालरुजनीः प्रियदत्ता रयिष्ठितायादकादम्बः
 ॥ ॥ तर्थावयाया नैथीतिथतासनस्कृतिः ॥ वाक्पुत्र्यः ॥
 रथीमहाकालयन्तु ॥ अष्टयगु ॥ अष्टकोषः ॥ दानः ॥ अष्टयगु अष्टि
 गगिः दिग्गुणः ॥ अष्टकारणः हंसुका दिग्गुणः ॥ दानः ॥ अष्टादिनपूजे
 दानकारणः कृगवदूकगरावधायिनीनपूजा ॥ दानपिनः ॥ अष्टादिनपूजा ॥

५॥ योसमय मय्यध्याय ॥ १॥ योमिथुनावान ॥ वाक् ॥ कोमात्रीजागस ॥
 १॥ अथ नव गत्त पागवन्दनविधि ॥ ॥ वाकन ॥ श्रीमच्छु
 क्तन ॥ षण्णयवित्तस चन्द्रामृतप्राविन कृगाधी ॥ धनयामि
 तीगृहमहासिद्धे ॥ समोनाधिर्ग ॥ ज्ञानन्दागमयन्तवात्मक
 मिद ॥ श्रीमकिरवधु ॥ चिर्ग ॥ तत्पीतयथमसमस्तजगतां सौर्य
 यवन्देसदा ॥ ॥ दयविगममृर्ग ॥ पिवा मिरवर्ष ॥ यधुयाध
 समुच्छेद ॥ कानर्धशेनवादिर् ॥ स्वस्वार्ग्याविका ॥ भय सनरक्ष

१॥ नयी यगा ॥ तस्मादिमस्तिर्नादवी ॥ यूर्ध्वहन्ता ॥ ॥ मयर्ग ॥ ॥
 वाहस्वाहा ॥ १ ॥ चेनाला ॥ सवन्मायमिलत्कलायेकलिर्नका
 रुहन्नागर्गचन्द्रा ॥ यन्दुमहन्दुर्गुमुवन् ॥ लोवस्मादिशि ॥ १॥
 विती ॥ श्रीर्गदवग ॥ १॥ यर्गमूर्निगर्ध ॥ १॥ माक्रार्थिरि ॥ १॥ सर्वदा
 वन्दे पागमर्हद्वितीयमधूना ॥ चात्मप्रवाध ॥ १॥ ॥ दयवि
 ॥ २ ॥ ॥ जलचनेका ॥ मयर्भीन ॥ नसावर्ह ॥ रुनिह ॥ नवस्मादिद

स्वर्गमयं पवित्रं ऊर्गतां वध्वं परं यागिनी ॥ ॐ दयविता ॥ ८ ॥
 अथ उवाच ॥ मत्कर्म कृतं नैकं कलिमलकालं मदयो वध्वं पु
 किं मुक्तिं पुनः क्व वदतः सर्वं त्वं कर्म सीधेयी वध्वं प्राञ्जला
 दध्वं दध्वं कर्तुं नान्यदर्थं स्वर्गं पातुं तावन्मया पवित्रं ऊर्गतां
 वध्वं परं यागिनी ॥ ॐ दयविता ॥ १ ॥ अथ पाककायला ॥ तत्त्व
 त्वं गुह्यं त्वं वध्वं युगलं मीनं गतानि मिलं मृगं सर्वं च यो यत्र नि
 स्रध्वं यास्वामि नमो यो यति ॥ दिशो वदन्मयं वरादि ॥ १ ॥ ता म

मे वध्वं यागिनी ॥ पातुं तावन्मया पवित्रं ऊर्गतां वध्वं परं यागिनी ॥
 दयविता ॥ ८ ॥ कश्चिदर्थं ला ॥ अलिपिषितं पुनश्च ॥ यागपूजाय
 नाहं वदु विप्रि कूलमागन्तुं नमः सन्नाविताहं ॥ यद्युक्तं विम
 खाहं ॥ एतवीमाश्रिताहं ॥ गुप्तं वचनं यथाहं ॥ एतवाहं निवाहं ॥
 दयविता ॥ ८ ॥ ॐ तिपो वन्दनं ॥ ॥ अथ न समयं विधातुं
 यन्नि कावानं ॥ ॐ जय किदयाहन पादयकजं ॥ पुसन्न वामा
 मृतमाकदायकं ॥ अनक सिद्धाक मति युवाधकं नमामि वाष्ठा

सुकथागिनीगर्भा॥यागिनीसुकमधुसूमागुमधुलवधिरा
 नमामिगिरसानार्थंरुनवरीनवीधियो॥भूनादिघानसंसा
 न॥धनविधुसहृतव॥नमब्धीनाथवेद्यायरेकडाषधधनि
 र्धा॥आयदादुनित्रागाभसमयावानलघनातासर्वनिमय
 याहकिदिव्यवेकसमलनाता॥आयूनात्राग्यमेधेय्यीकिल
 रसुखजय॥लक्ष्मीमनानमायेष्टुयाशुमासर्वधवता॥सिद्धि
 कानाप्रतिपालकाना॥उतद्विद्यानचतयाधनाना॥

सुसुकलसुनालीकनागुधुनिरुगवानकलभा॥नंदरु
 धकाऽसर्वविनध्यकुविदाषकाऽभवेत्कोष्ठासुवीनसुधु
 सनासुगुनसदा॥विन्दुविया॥॥पाएशोकययसमान
 अथचनसाधनेकमुपूजाधनउचनपूजा॥श्वचने॥उसोविह
 द्विचकासनायेयापूजा॥न्यामहासिद्धिखचनुमूर्ययापूजा॥रुचन
 उंमंभूनाहतचकासना॥ययापूजा॥उंलमाहासिद्धिरुचनम
 र्क्ययापूजा॥उलचनोउं॥महासिद्धिकुं॥चकासनायेयापूजा

कथयन्तानां पद्यमि

ॐ नमो महासिद्धिजलमूर्त्ययाय ॥ १ ॥
 स ॥ नमो महासिद्धिजलमूर्त्ययाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो महासिद्धिजलमूर्त्ययाय ॥ ३ ॥
 स ॥ नमो महासिद्धिजलमूर्त्ययाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो महासिद्धिजलमूर्त्ययाय ॥ ५ ॥
 स ॥ नमो महासिद्धिजलमूर्त्ययाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो महासिद्धिजलमूर्त्ययाय ॥ ७ ॥
 स ॥ नमो महासिद्धिजलमूर्त्ययाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो महासिद्धिजलमूर्त्ययाय ॥ ९ ॥
 स ॥ नमो महासिद्धिजलमूर्त्ययाय ॥ १० ॥

यदवलिधुनउधुतय्यदयाय॥
 यदवलिधुनउधुतय्यदयाय॥
 वामनमूर्ति धृष्टीधृष्टीधनाथः यज्ञतर्कगिरुद्वालोक
 रणीत्याधयकानकासिद्ध्याः पितृगणसहिता मातनः ४ कृष्ण
 यागिनीयागयूकाः ४ कलजलखचनाः ४ यानमंतत्यिवत् ॥ यिव
 नुदवताः ४ सदास्ते नृदधुविनायकाः ४ यागिनीकृष्णालाधुमम
 दहव्यवस्त्रिताः ४ भुविनारक्षरवद्धहज्वनामनमवच ॥ नागर्षा
 कर्यनाकिनाज्यासखसंपदः ४ वाक् ४ उथलमगुज्जमानस्य
 यथाभाक्काकरुलयापि ४ कामनाथीमतुडीणीयधिमज्जानूज्या

यदवलिधुनउधुतय्यदयाय॥
 यदवलिधुनउधुतय्यदयाय॥
 वामनमूर्ति धृष्टीधृष्टीधनाथः यज्ञतर्कगिरुद्वालोक
 रणीत्याधयकानकासिद्ध्याः पितृगणसहिता मातनः ४ कृष्ण
 यागिनीयागयूकाः ४ कलजलखचनाः ४ यानमंतत्यिवत् ॥ यिव
 नुदवताः ४ सदास्ते नृदधुविनायकाः ४ यागिनीकृष्णालाधुमम
 दहव्यवस्त्रिताः ४ भुविनारक्षरवद्धहज्वनामनमवच ॥ नागर्षा
 कर्यनाकिनाज्यासखसंपदः ४ वाक् ४ उथलमगुज्जमानस्य
 यथाभाक्काकरुलयापि ४ कामनाथीमतुडीणीयधिमज्जानूज्या

यदवलिधुनउधुतय्यदयाय॥
 यदवलिधुनउधुतय्यदयाय॥
 वामनमूर्ति धृष्टीधृष्टीधनाथः यज्ञतर्कगिरुद्वालोक
 रणीत्याधयकानकासिद्ध्याः पितृगणसहिता मातनः ४ कृष्ण
 यागिनीयागयूकाः ४ कलजलखचनाः ४ यानमंतत्यिवत् ॥ यिव
 नुदवताः ४ सदास्ते नृदधुविनायकाः ४ यागिनीकृष्णालाधुमम
 दहव्यवस्त्रिताः ४ भुविनारक्षरवद्धहज्वनामनमवच ॥ नागर्षा
 कर्यनाकिनाज्यासखसंपदः ४ वाक् ४ उथलमगुज्जमानस्य
 यथाभाक्काकरुलयापि ४ कामनाथीमतुडीणीयधिमज्जानूज्या

मायजगत्तन्मात्रकत्वाच्चनकर्मणिपठ्य... अथतत्त्वखण्डनं ॥ १ ॥ अंकीष्टींशुं सोऽंकां आत्मतत्त्वं
रक्षधयामि आत्मजन्मकृतया ज्ञेयं संहारयस्व क्वा
सत्त्वतीसहिताय धनध्यादिमायान्तं न कर्तुं भिन्नं
तमेन आत्मतत्त्वात्मन आत्मतत्त्वं रक्षधयामि भिन्नं
हं स्वाहा ॥ १ ॥ अंकीष्टींशुं सोऽंकां विद्यातत्त्वं रक्षधः
मि अन्ति काया न च विद्या जन्मकृतया यं संहारः

मीनावायसहिताय ह्युच्चविद्यादिसदा
चित्त्वात्मन विद्यातत्त्वात्मन विद्यातत्त्वं रक्षधः
मिवाहं स्वाहा ॥ २ ॥ अंकीष्टींशुं सोऽंकां भिन्नतत्त्वं
यामि यन्काया न च भिन्नं जन्मकृतया यं संहारः
यावन्ती सदा भिन्नसहिताय धनध्यादिभिन्नान् देवतत्त्वं
तमेन भिन्नतत्त्वात्मन भिन्नतत्त्वं रक्षधयामि भिन्नं हं

金



२०
 १५
 १०
 ५
 ०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०

० cmts. 5 10 15 20 25 30

सुलाका नृया प्रपुर्ना दहा किं सु संगी यम
 या सुनृया निवाञ्छुना माच वामाच नोडी त्वमत
 विन्दु नृया वधूता ह्य चन्द्रा कृतिस्तु तिका वामाका
 स्याजिते ४ कणय नत्व मन्त्राय नो तस्व नृया र्गमाका
 नी आदित कांत या निस्व नृया च धी कं ० सेवा धिनी नृदमा
 थान तहा कि ४ ससुद्धा निमूर्तिर्वनी सार्चिनी एनरु निस्ति

सात्मिका लानरुता ह नार्या च सी दिस लोकी कसाद्यात्मिका
 नृय ही सार्चिता वृत्त देहा नृग लीमहा सन सील नि निषा
 र्गता विंदु सदा ह निष्पद देह युता र्गव सच वान नंद कि
 सा शौर्य प्रद र्गव विर नवाद्याने की जन ह कि यना मानि
 उमाता चित नृदहा कि ४ खगी सिद्धया र्गव नि सि
 पुहा द ४ ना सितियो न्या र्गव वा निष्ठुद्या निवागी ४

२०
 १५
 १०
 ५
 ०
 ० cmts. 5 10 15 20 25 30
 व्यालमिका क्रिया । मंगला सिद्धि लक्ष्मी वितृति ।
 गति ४ सा स्वता यना खातिना नायणी न कचडा कना स दल
 नूयामहा कृष्णा याग पिया स्वजय ती जया चा जिता नूद समा
 नी, त्वेन वा त्मा रघु द व स्य चा संग या ना ७८ ता मनु मा ग्ना नू र
 मर्ग रि ४ वी न या ना नू न के ४ । सुर के मु स य अ स द वि र्य चा मृते
 दिव्य या ना सवे न क ज न म द्वि ज न म रि ज न म च रु ४ पंच षट् च क

५
 ०
 ० cmts. 5 10 15 20 25 30
 जन्मा ह वै स्रेष्ठ नाने ४ भु र ४ रु लु षे सूर्य सम द्य मा स दृ य म
 नु विद्या वे ता ह्रा सि रि मू दु र्क काल का यालि रि दिव्य च य नि नू
 पे न म स्का न तुं कान स्वा हा स्व वा कान वो ष ष्ट ष क्कान रु क्कान न
 ऊ ना रि न वे ष्ट मं ग द ना चा नि रि वा स ह सा क्ति ते शु क
 जा व ली जा पि रि ४ सा ध के मा र्ग रि मृ ग ले दी क्ति ते यो नि रि
 नि नी हं द म ला य के दिव्य की ज ल स य अ स या गि नी न

सिद्धिप्रदादिविर्लपयन् यन्मेलयन्नेम्लहसंयु
 यन्मेलयन्नेम्लहसंयु यन्मेलयन्नेम्लहसंयु
 नवाहतावर्तते रुकिता यः यः १० दृढकल्वककालदिकलनिका
 लसुविस्मयनेयः सदा मानवः सोपिथी नृगिनाम्ना विप
 वता एव हि नृसकमश्च पितृनरकसंयु विपूयान्नागा महान
 श्रीरहमन्ना नान्यदानान्नकाश्च वक्ष्यन्नागान्ना महादायद

द्वाविमूर्त्योतितापिसंयुतद्विचुदोर्यमर्षं यन्मेलयन्नेम्लहसंयु
 सुनदिश्यामात्रिकसत्कुरुलाद्युष्टगधुस्तलयेषिवक्षाहतेवध
 नेनगिपाष्टी १० जावद्वपादागलेमपितनामसंकीर्तनाद्वि
 मूर्त्योतितापिसंयुतद्विचुदोर्यमर्षं यन्मेलयन्नेम्लहसंयु
 कालकालागितेयुष्टास्तद्विचुदोर्यमर्षं यन्मेलयन्नेम्लहसंयु
 मेलिमालालि सत्यार्कितेयुष्टास्तद्विचुदोर्यमर्षं यन्मेलयन्नेम्लहसंयु

नवभगता हं दमस्वायना चं विव । नवसुखना महादवा ।
नववमहायना । ततो लिङ्ग विनिर्गद्य निग्नता यनमव्ययी । नीला
जनसुसंप्रत्याकुतूषामहादरा । ॐ प्रद्वालवदना वदना द्य
विना नृहा । स्वतृया च विनृया च जनकाका नृपिणी । वामप
साप्रितकना दवी दवमूवा च ह आङ्गा नन्दसमा विष्टा मुत्पानं द
कलीकृता । नवग्निका गमाभाति कारुकस्य वनप्रद एव हि त्वं भ

महासत्त्व दृष्टिवातामदीयकषणाग्नीविधवदृष्टकाः सकथं
 आविर्गतं च यथा ॥ पार्थयस्त्ववनकिंविद्यन्ममनसिनाचनं ॥
 वृत्तिधीमालिनीदलुकैस्तानुसंयुक्तं ॥ १० ॥ एतन्मम ॥ ५८
 अरुणाविंशतिकमयन्तुत्रायधध्या ॥ विन्दु ॥ गिका ॥ अका ॥ गि
 दृ ॥ अरुणयन् ॥ अरुका ॥ वा ॥ उ ॥ य ॥ वा ॥ उ ॥ य ॥ य ॥ उ ॥ य ॥
 वृ ॥ दान ॥ गो ॥ न ॥ व ॥ क ॥ व ॥ न ॥ म ॥ द ॥ द ॥ न ॥ द ॥ न ॥ द ॥
 ग ॥ वि ॥ वा ॥ हा ॥ म ॥ न ॥ न ॥ ग ॥ य ॥ म ॥ न ॥ द ॥ न ॥ य ॥ क ॥ न ॥ स ॥ स ॥ स ॥

१० नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥

लक्ष्मीनारायण ॥ सुकलानामहमप्यवनदलाकपूजित ॥ एकैकनाथि
मधुसूदनमममकेकरुदिनी ॥ अष्टगुणललाभनरुदिनीवधूनी
धरा ॥ विश्वलतामहादेवी ॥ उज्जंगकूटिलोकाति ॥ वसुविबुध
नृप ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥

२०
१५
१०
५
०
० cmts. 5 10 15 20 25 30
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ द्वादशोऽक्षरं ब्रह्म ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ द्वादशोऽक्षरं ब्रह्म ॥
साकृत्प्राप्तं दायिनी ॥ लंघ्यं यत्र मादवी दकिरेण नृगमिनी ॥
नासारगुप्तसमूहकीर्णं मधुसूतं युवाहिनी ॥ द्वादशोऽक्षरं ब्रह्म ॥
नृतालमृद्विद्योवस्ति ॥ नादघटिकसंयुक्तं गुणसूक्तसम
न्विकं ॥ स्तूलं सत्त्वसंयुक्तं धर्माधर्मद्वयं ॥ कार्यकान

५
०
० cmts. 5 10 15 20 25 30
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ द्वादशोऽक्षरं ब्रह्म ॥
स्वतन्त्रं ॥ सर्ववर्णधनी दवी गुप्ततत्त्वोतिविष्णुतं ॥ अक्षरी ॥
महाशरणं सत्ता नृवता निष्ठी ॥ अयाचविजयावेव जयनी
चायनाजिता ॥ उर्वरुवी उमभक्तं नमस्तु पायमाचनी ॥ वन्द्य
मादकनी दवी ॥ आठोऽक्षरं ब्रह्म ॥ अमेणी ॥ अकिंशूलं नम
हावृहसमन्वितं ॥ अमनी ॥ अमनी ॥ अमनी ॥ मायायुक्तं प्रवर्तिनी

सुचन्द्रेन वीरवीरसुखी सखेन वीरवीरसुखी सखेन वीरवीरसुखी
त्वया नृपयकीर्तिता ॥ अमृताख्य नृचरधुनमसुखानलेन वीरवीरसुखी
उष्ट्रात्कतेविशुद्धिदत्ता नकाक्षिरयाननानमामि देवदेवि
अधानधानविग्रह ॥ काकाला मूर्खी वगवती उमा देवी सप्त
स्वती ॥ हंसप्राणवह देवी रत्नमूर्खी भक्तिमालिनी ॥ काष्ठीकीर्ति
रत्नमूर्खी दुर्गाकायायनी तथा ॥ निरुक्तिना समाख्याता न

काकालाकायना ॥ वाक्कीर्तिमाह्वयनी चैव कीर्तिमालिनी वीरवीर तथा ॥
वानाही चैव माह्वयनी चामुखी चैव रयानन ॥ या रगसिद्धिद
वर्णि कुलाष्टकविहृत्योऽपि चैव रुद्राग्नीया मयानमृद्य
वाग्वी ॥ वायवा चैव कीर्तिवती उमा च उदाहृता ॥ प्रयाग
वन्माला अदहा राजयन्त्रिका च विगुका मुक्त चैव देवी का
दृताथ सुमी ॥ तथा कालि उमा देवी देवदूती नमः सुता रदका

[illegible]

२ॐ नमोऽधीगोदाधाय ॥ अथ गितल्लभधनमनपूजाविधिः ॥
 देवदत्तसादव्याङ्गान् मदत्तसासलायीसयकचाय ॥ वलिअर्घ
 पात्रं गौरवार्घ्यापातासनचाय ॥ तायहालाउवाय ॥ धननासिय ॥
 गवगुन्नमस्तान्यासयानातीर्थशुद्धिरक्षधनयाय ॥ धनारव
 सणिकावचाकथकचाय ॥ भ्रातृपूजा ॥ श्रीशिवनगपद्मदिलान
 मः ॥ कृष्णसिल ॥ रुद्र ॥ मधुलसतय ॥ पूजा ॥ सर्वद्विसमृद्धि
 कलात्मने नमः ॥ कृष्णयातलिस ॥ अर्चुमधुलाय द्वादशक ॥

कलशकृतसुधा

नमः॥ कृष्णसुदयतय॥ शुद्धितयखजलाहातयक र्धुनत
पूजा॥ संसाममहुलायथादणकलात्मननमः॥ अन्यानिमूढा
चैतस्वान्नजुततय॥ पूजा॥ बावामदेवायनमः॥ यशुयतयज्ज्मा
यरुट॥ लखनहायज्ज्मायरुट॥ वंश्चनमूडानज्ज्मृतयाय॥ दू
अवगुष्ठन तालगयदिग्वन्तनरुट१०॥ नमःसाय॥ खजलाहा
तनमत्स्यमडानकृष्णसताकय्याउरंभधनयाय॥ दीपनमस्वामि
नीयनमोकाणसून्यवाहिनीचन्द्रसूर्याग्निरक्षणीयागविणश्चाहा

ॐ ऐं ह्रीं तिलस्कन्धीयसकलजनवाग्मदिनीसकलयजुजनवाक्
 ३४१॥ गद्योद्यवचनान्तिलस्कन्धीकृत् २००० रुद्रस्वाहा ॥ ३४२ ॥
 नमोभवपत्रवृक्षस्कलसूक्ष्ममयैकर्वकवाद्गवावृक्षहयानिन
 नाधायाम्हा ॥ सूक्ष्ममहलसंस्तुतवृक्षलयसंस्तुतं अमावीज
 मयदविशुक्लमेयाद्विमृश्यातां ॥ दवानां यथावावीजं वृक्षानन्दमयं
 यदि तनसंयनतदविशुक्लमृश्यायाहति ॥ ३४३ ॥ मूलनक्षत्र १० ॥
 वंश नमो ॥ ३४४ ॥ अवगुण ८ ॥ ३४५ ॥ अस्त्राय रुद्र १० ॥ क्षांतिका ॥ यानि

ग्यमेध्वर्यं हुरुरुल कामनार्थं धीमत्तुषी धीं हूँ हृदयं नमः
 या पवात्र पूजाकर्तुं धीं हूर्यार्घनमः॥ यूर्यार्घनमः॥ धूर्यार्घनमः॥
 आचार्यार्घन पूजा एतकाया अं दवया ऊं सकलं रक्तां सकुमुक्ता
 पनायाय॥ कसुया समिपसु चतुर्था लातय॥ चतुर्तय धनं रक्ते
 पंला क्कायला हायाल लला॥ धनं वाया अयूजा रुय॥ नासिय॥
 हूर्यार्घं गुननमः कान न्यासे॥ अर्घां धीव अर्घ पाग पूजा॥ आत्म
 पूजा नैयाय॥ वाहन दत्तमा माहनी रुय॥ मदतसा ममाला॥ ॥

मालिनी वान आवाहन॥ यश्च वलि विय॥ समय न्यान क्काय नय
 धी॥ ॥ धीं सन्तुष्ट आवाहनं निरुधं थअ मालका पूजायाय॥ धय
 यादान इस्ला देव पूजा याय॥ ॥ कलहा पूजा॥ आसन निवृ
 वासनाय पायू॥ निरुधं हासनाय पायू॥ गुया अलि॥ कुं रं स
 मयु अयाय अमृग ध्वनी धाकि सहिताय पायू॥ ३॥ वलि॥
 धनूया निमडा॥ ॥ कसु पूजा॥ आसन निवृ काना सनाय पा
 यू॥ गुया अलि॥ निरुधं कल कसु याय पायू॥ ३॥ वलि॥
 चतु पूजा॥ अमृग याय पायू॥ निरुधं ताय पायू॥ निरुधं ताय पायू॥

निरुधं ताय पायू॥
 निरुधं ताय पायू॥
 निरुधं ताय पायू॥

शानिमूडा॥ ॥सगुणयूजा॥आसना॥उंयमासनाययायूज॥
 ॐअष्टवक्त्रामादिअष्टविनेजीवयायायूज॥३॥वलि॥अनूमडा॥
 वलिमूल॥ ॥स्नानादिचगस्नानकाय॥धूपदीपनय॥समये
 न्यानकाय॥रुलरुलमधिमूखशुद्धिकाय॥ ॥नय्यवयाय॥
 गायहाल॥ॐसुप्रतिष्ठप्रतिष्ठाएवकु॥ ॥मालकाऊययाय॥
 मधुलेदयक॥सागमालकायाय॥ ॥स्यायदतसाधनमाल॥
 धनदवजायसकस्या॥दक्षिणकाय॥धनकलषविसर्जनया

नाडाअरिषककाय॥अरिषकवियसकलयात॥कलषधका
 ठियातलडाकाय॥ ॥अतसिधनतिचकसकलयाती॥ ॥कम
 विसर्जनयाडाडादर्शनविया॥नकिनियातकमलडाकाय॥चनू
 यागलडाकाय॥चनूवातयमालका॥कमामृतचनूदेवसका
 य॥ ॥खेजयागसकलसकलडाकाय॥नय्यवी॥उंयीतियेता
 सनकाएवएयरुनक्षत्रेवाम॥कमूर्ति॥धृष्टीधृष्टीधृष्टी
 थ॥यवतरुनिरुक्षलोकपाला॥रुणी॥डा॥यकानकासिद्ध

विष्णुगणसहिता मातृ ४ देवपाला ४ यागिनी यागयुक्ता ४
 क्लृप्तजलखचना ४ पानमंतपिवन्तु ॥ पिवन्तु देवता ४ सवस्मिन्
 दाधुविनायका ४ यागिनी देवपाला ४ मम देहवच्छिता ४
 अविनाश ४ देह ४ अचना मनमवच ॥ नागरा ४ कर्यनासि
 नाजशी सुखस्य द ४ वाक् ॥ यथा एतत् यजमान ए यथा ४ ॥
 क कामनार्थं तदुक्तं ४ नी ना आयु ना राग्ध ४ रुलवा पि
 कामर्थं ४ मत् ४ ४ सुदवता य पंचायचान पूजा सर्वार्थ

प्रथमसमय चक्रमायु ना राग्ध मे ध्वर्यजनधनलक्षी सकृति
 सीतानवृद्धि न सु यथा ४ ४ क रुलदायिना ४ वक्तु ॥ आरुणा ॥
 यलायागत्य ४ ४ भूषा विंशति क माद्यान मष्टा विंशति मनु
 ल ॥ नमस्तु चक्रवर्ति ४ नमस्तु यनमध्वनी ॥ नमस्तु ४ नृवदव
 नमस्तु स्नानदायक ४ भूषा ४ वदकानां यागिनी नीतयेव च
 देवपाल गणदीनां गणय सर्वकषका ॥ क्लृप्तजल मिर्म सर्व
 काकारनमाय ह ॥ वाक् ४ ४ द्वितीय समय चक्रमाय ॥ ॥

यलायागनर्पणीं निंजयाचकक्रमहमिकावसतथा न ३ दली
नाया ६५ साभिलमनूकनीगगर १६ नि १५ सकाभसुया। या का
याद्रनलामकूपनिलयायासीह्मिताधुषू नादवा १ पणुपा ६ १
कणयना सुपुनकीला विता नन्दुगुल योगिना नन्दुगुल
नका नन्दुधीकला वायायिवाभकलदीहिता १॥ दहित १ सुखि
न १ सुख सुखिनसुदुदवव ७ प्रसादसुसदा १ १ चननी जीवध
ननी ॥ वाक्य उर्ध्व १ नीय समयचकधय ॥ ॥ हापाल ललाया

पनर्पणीं निंमत्समीसमहामासं शाकवर्जनकचन १ षष्ठका
नचनदिर्घं कृकिं कृष्टं नमासुत ॥ जलचन १ कृष्टयामि स्वाहा ॥ वा
क्य उर्ध्व चतुर्थ समयचकधय ॥ ॥ समयविय पागनर्पणीं निं
जयनिदवाहनपादयंकर्ज प्रसन्नवामासुतभाद्रदायकी अनन
सिद्धान्तमतिप्रवाधक नमामि वासु कथामिनी गनी ॥ यामिनी
चकमधुस्क मासमधुलवष्टिनी नमामि गिनसानार्थ १ नवी १ नवी
विर्या १ आयदादुनितीगा १ समयाचानलघना १ सत्री निमवाध

हस्तुदिव्यचक्रसमन्वयः॥ वाक्पञ्चमचक्रयूजासंपूर्णार्थः
आयुषागन्धमेध्याजनधनलक्ष्मीसंगतिर्मानवृद्धिर्नमः यथा
॥ भस्त्राकहलदायिनाखर्वगु॥ आका॥ ॥ पागुराकपूरसमय
दत्तातय॥ स्नानकाकायाउ॥ स्नानविय॥ आचार्यपूजा॥ दक्षिणका
य॥ न्यासलिकाय॥ वलि॥ अय॥ नासिय॥ सूर्यसाक्षि॥ अथराज्ञ॥
ॐतिगितत्त्वदीपयूजाविधानसंपूर्णः॥ गुरुमस्तु सर्वदा॥ ॐ॥

॥ अर्थकोमारीपूजा॥ धातासनवायनियलवायवलिअर्घ्या
गसगुण॥ ॥ स्नानादिवनस्नानखल॥ नासिय॥ अद्यादि॥ वाक्प॥
सूर्यार्घ्य॥ ऊनस्ययथाभस्त्राककामनार्थकोमारीयागमर्चनमि
त्यर्थ॥ गुरुनमस्तु न्यासार्घ्यागपूजा॥ आत्मपूजा॥ मालिनीवा
यवलिविय॥ श्रीसम्पदुवावाहनीनिस्यपिदवादिधामासका
दगुलियाय॥ कोमारीपूजा॥ ॐकाँहदयादिन्यासः॥ अस्तु॥ ॐ॥

मयूनासनायवापू॥ ध्यानं निजं वन्द्यकात्रुसंकाशैरिह
 टिसमयरासूर्यविम्बनिरादवी ॥ वृषत्पहसिगानना ॥ वालनुर्या
 महामायाकीमानीशुभरूपिणि ॥ शुद्धं चक्रे शुद्धं काशयुष्मलिः
 भक्तिस्तुतं ॥ यमनागमविमोनिमूकालं कालहृषिता ॥ निधि
 राजसमावृष्टा विद्यानं भक्तिकात्रिणी ॥ गोलग्यसंपदालक्ष्मीमा
 यूरुपुण्यगणधिया ॥ सर्वकामध्वनीदवी सर्वव्यापिमहध्वनी ॥

आनन्दउक्तिगावक ॥ लोकास्यष्टिकात्रिणी ॥ ध्यात्वा दवीसदनी
 मि कीमानीशुभमङ्गला ॥ ध्यानपूर्यनमः ॥ आवाहनं ॥ घाशादचरन्
 सिद्धपूषकाय ॥ शुभाशुलि ॥ मित्रं चक्रे जं जं ऊं कां कां कीं श्रीं
 महाकीमानीकाविश्रयापू॥ ३ ॥ मित्रं कीं श्रीं कर्करीक ॥ श्रीं किं
 लाक्षसूयी ॥ अधिपतयसहकमानीविमह ॥ आकन्ददस्यमलाह
 वलि ॥ निजं हंसं लयापू॥ निजकां हृदयादिनपूजा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ध्यात्वा दवीसदनी

धानिमुडा ॥ कृष्ण नक्षत्रा ॥ लंकाना ॥ उज्जयिनी ॥
 माहाकाल नदि ॥ खडासग ॥ माहाकाल ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
 यज्ञा ॥ उज्जयिनी ॥ दिग्विजय ॥ यज्ञा ॥ उज्जयिनी ॥
 बलिमूल ॥ धूपदीप ॥ नैऋत्य ॥ ॥ जय कृष्ण ॥ मधुल ॥
 भाग्य ॥ नैऋत्य ॥ वदक ॥ लंगरी ॥ दक्षिण ॥ मधुकोमा

उज्जयिनी ॥
 वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
 यज्ञा ॥

नीकाच उदय ॥ विनिहा ॥ किस्स ॥ काशी ॥ काध ॥ काली ॥ पिनाकी ॥
 नरपिण्डगी ॥ वक्रिवाली ॥ अर्ध ॥ यार्ज ॥ वदक ॥ यार्ज ॥ मधुल ॥
 नैऋत्य ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥
 दक्षिण ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥
 नैऋत्य ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥
 नैऋत्य ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥ यार्ज ॥

उज्जयिनी ॥
 वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
 यज्ञा ॥